S.R.S.D. Memorial Shiksha Shodh Sansthan, Agra, India
UGC Sl. No.64431

INQUISITIVE TEACHER

A Peer Reviewed Refereed Research Journal
ONLINE ISSN-2455-5827
Volume V, Issue II, December 2018, pp. 81-84
www.srsshodhsansthan.org

पेरियार ई.वी. रामास्वामी और दलित सुधार आंदोलन

सुरेन्द्र प्रताप सिंह खरे
शोधार्थी पी–एच0डी0 (इतिहास)
विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन)

शोधसार

भारत में दलितों के अधिकार सम्बन्धी आंदोलन महात्मा बुद्ध से शुरू हो गये थे। आगे यह परम्परा चलती रही और मध्यकाल में भारतीय संतो द्वारा भक्ति आंदोलन शुरू किया गया इसमें विभिन्न सामाजिक व धार्मिक बुराइयों के साथ–साथ दलितों को सामाजिक अधिकार दिलाने के प्रयास शुरू किये गये लेकिन उस समय अशिक्षा व धार्मिक अंधविश्वासों के कारण क्रांतिकारी कदम नहीं उठाये जा सके। 19 वीं. शताब्दी में भारत में नवजागरण हुआ और सामाजिक व धार्मिक बुराइयों के साथ–साथ दलितों की समस्याओं को गंभीरता से लिया गया। इस सदी में भारत में विभिन्न सामाजिक व धार्मिक सुधारवादी आंदोलन चले।

भारत में दलितों के अधिकार सम्बन्धी आंदोलन महात्मा बुद्ध से शुरू हो गये थे। आगे यह परम्परा चलती रही और मध्यकाल में भारतीय संतो द्वारा भक्ति आंदोलन शुरू किया गया इसमें विभिन्न सामाजिक व धार्मिक बुराइयों के साथ–साथ दलितों को सामाजिक अधिकार दिलाने के प्रयास शुरू किये गये लेकिन उस समय अशिक्षा व धार्मिक अंधविश्वासों के कारण क्रांतिकारी कदम नहीं उठाये जा सके। 19 वीं. शताब्दी में भारत में नवजागरण हुआ और सामाजिक व धार्मिक बुराइयों के साथ–साथ दलितों की समस्याओं को गंभीरता से लिया गया। इस सदी में भारत में विभिन्न सामाजिक व धार्मिक सुधारवादी आंदोलन चले।

दूसरी तरफ शिक्षा के प्रसार से भारतीयों ने सामाजिक समस्याओं को गंभीरता से लिया। दलितों की समस्याओं को इस काल से प्रमुखता मिलती चली गई। इस समय महात्मा ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र में दलितों के अधिकारों सम्बन्धी विभिन्न आंदोलन शुरू किये और दलित सुधार आंदोलन को एक सशक्त आंदोलन का रूप प्रदान किया। इन्हीं समाज सुधारकों की कड़ी में महादेव गोविन्द रानाडे, रघुनाथ राव, महात्मा गांधी, भीमराव अम्बेडकर, जगजीवनराम, पेरियार ई.वी. रामास्वामी आदि प्रमुख थे।

20 वीं. सदी के प्रारम्भ में दलितों के अधिकारों सम्बन्धी आंदोलन चलाने में दक्षिण भारत में क्रांतिकारी भूमिका पेरियार ई.वी. रामास्वामी की रहीं जिन्होंने समाज सुधार के कार्यों के साथ–साथ भारतीय राजनीति में भी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई व दलित सुधार आंदोलन को नवीन स्वरूप प्रदान किया। पेरियार इरोड वेंकट रामास्वामी का जन्म 17 सितम्बर 1879 ई0 में तमिलनाडु के इरोड़ में हुआ था उनका परिवार काफी धार्मिक प्रवृत्ति का था लेकिन पेरियार किसी प्रकार के धार्मिक अंधविश्वास व आडम्बरों में विश्वास नहीं रखते थे। पेरियार ई.वी. रामास्वामी धार्मिक अंधविश्वासों व सामाजिक वुराइयों के कट्टर विरोधी थे। वे भारत से सभी सामाजिक बुराइयों व धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करके एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे वे महात्मा गांधी की तरह एक राजनीतिज्ञ के साथ–साथ अच्छे समाज सुधारक थे।

कांग्रेस के प्रति आकर्षण– जिस समय पेरियार जी अपने शहर इरोड की नगरपालिका के चेयरमैन थे उस समय कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता सी. रामगोपालाचारी ने उन्हें कॉंग्रेस का सदस्य बनने के लिये कहा। उस समय वे कॉंग्रेस से काफी प्रभावित थे उन्होंने कांग्रेस की बहुत सहायता की। उनकी दृष्टि में कांग्रेस के कार्यक्रम राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक विकास व सामाजिक एकता आदि से प्रेरित थे। असहयोग आंदोलन के समय दक्षिण भारत में इसका नेतृत्व पेरियार ने ही किया। इन्होंने हर प्रकार से कांग्रेस की सहायता की क्योंकि उस समय कांग्रेस पर गांधी जी का प्रभाव था और पेरियार गांधी जी से काफी प्रभावित थे पेरियार ने आंदोलन को काफी गंभीरता से लिया और असहयोग आंदोलन के समय उन्होंने अपने आर्थिक हितों की बलि तक दे दी।

निम्न वर्गों के अधिकारों के लिये आंदोलन– पेरियार जी जातिवाद, वर्णत्यवस्था व ऊँच–नीच की भावना के खिलाफ थे। वे सभी को समान अधिकार दिलाने के पक्ष में थे उन्होंने दक्षिण भारत में अछूतों के लिये काफी कार्य किये। उस समय केरल में वायकोम आंदोलन शुरू हुआ जो दलितों के अधिकारों से संवंधित था। इसको सफल बनाने में पेरियार की महत्वूपर्ण भूमिका रही।

वायकोम आंदोलन– यह आंदोलन केरल के अछूत कहे जाने वाले लोगों पर अमानवीय बंधनों के खिलाफ चलाया गया था। ये बंधन इतने कठोर थे कि अछूत अपनी गंदी बस्तियों में एक प्रकार से नंजरबंद रहते थे इन लोगों का सवर्ण लोगों के इलाके में जाना अपराध माना जाता था और ऐसा करने पर उन्हें दण्ड दिया जाता था। केरल के प्रमुख कांग्रेसी नेता जॉर्ज जोसेफ इस आंदोलन के इंचार्ज थे यह आंदोलन ठीक प्रकार से आरम्भ नहीं हो पा रहा था। जॉर्ज जोसेफ के साथ प्रमुख कांग्रेस नेताओं को जेल में डाल दिया गया। इस आंदोलन के सभी संचालकों के जेल चले जाने से इसको काफी आघात पहुंचा।

उस समय दक्षिण के प्रमुख राजनेता व सामाजिक क्रांतिकारी पेरियार से बायकोम आंदोलन का नेतृत्व करने के लिये अपील की गई। वे सामाजिक सेवा के लिये हर समय तैयार रहते थे। शीघ्र ही वे आंदोलन के नेता के रूप में वायकोम पहुँचे। उनके पहुँचते ही वहाँ के राजवाड़े शासन ने उनके साथ उदार नीति अपनायी। उनके साथ सद्भावना पूर्ण व्यवहार करने का कारण यह था कि वहाँ का शासक उनके पिता जी का घनिष्ठ मित्र था लेकिन पेरियार अपने उद्देश्य के पक्के थे और उन्होंने राज्य का दौरा किया उनका प्रमुख उद्देश्य दलितों को उनके मानवीय अधिकार दिलाना था। इस आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया बाद उनकी पत्नी ने राज्य

की महिलाओं को संगठित करके इस आंदोलन का संचालन किया। उनके प्रयासों से यह आंदोलन सफल रहा और अछूतों के अधिकारों को मान लिया गया तथा उन पर लगे सभी प्रतिबन्ध हटा लिये गये।

आत्मसम्मान आंदोलन– इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्राम्हणवाद व सामाजिक बुराइयों का विरोध करना था। इस आंदोलन द्वारा धर्म व ईश्वर के नाम पर चल रहे पोषण को समाप्त करके एक स्वच्छ समाज की स्थापना करना था। उनके अनुसार सभी धार्मिक आडम्बर मनु जैसे विचारकों द्वारा बनाये गये थे और इनको समाप्त करना भारत के लिये अति आवश्यक है। उन्होंने पुराणों को अंध विश्वास की नींब बताया। बाल विवाह और विधवाओं पर कटु प्रहार किये। इस प्रकार यह आंदोलन 1925 ई0 से 1929 ई0 तक चलता रहा और पेरियार जी ने जाति व धर्म पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ लोगों को जाग्रत किया। 1932 से 1935 ई0 के मध्य उन्होंने आर्थिक मुद्दों पर ज्यादा ध्यान दिया ताकि लोगों को आर्थिक विकास की तरफ प्रोत्साहित किया जाये। 1935 ई0 में जव वे जस्टिस पार्टी की ओर से सभापति चुने गये तो इनका प्रभाव दक्षिण भारत के साथ सम्पूर्ण भारत पर पड़ा। इस पार्टी के माध्यम से उन्होंने अपनी नीतियों व विचारों का प्रसार आसानी से किया। 1944 ई0 में पेरियार तथा उनके सहयोगियों ने द्रविड कडराम नामक पार्टी की स्थापना की इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन से मुक्ति व विभिन्न सुधार था।

सामाजिक सुधार– पेरियार भी दूसरे भारतीय समाज सुधारकों की भाँति सभी सामाजिक बुराइयों को दूर करके एक सद्भावनापूर्ण समानता पर आधारित समाज की स्थापना करना चाहते थे उनके अनुसार समाज में जो सुधार नहीं हो पा रहे थे उसका मुख्य कारण समाज सुधारकों का राजनीतिक स्वार्थों से प्रेरित होना था। वे समाज सुधारक के साथ–साथ एक अच्छे राजनीतिज्ञ भी थे। उनके अनुसार हमारे देश में सुधार दलित भेदभाव के आधार पर क्रियान्वित किये जाते है जिसके कारण किसी प्रकार सुधार नहीं हो पा रहा है। ऐसे समाज सुधारक समाज को गुमराह करते है।

दूसरी तरफ पेरियार के अनुसार समाज सुधारकों को धार्मिक अंधविश्वासों से बिल्कुल दूर होना चाहिये। जो समाज सुधारक खुद इन अंधविश्वासों में रहेगे तो वे समाज सुधार का कार्य नहीं कर सकते। उनके अनुसार अंधविश्वास की नींव पर धर्म व ईश्वररूपी भवन का निर्माण हुआ है। हम सब इन्हीं अंधविश्वासों से ग्रस्त रहते है इसलिये वे सबसे पहले इन अंधविश्वासों को समापत करना चाहते थे।

उनके अनुसार जाति भेद ने अपने व्यक्तिगत फायदे के लिये बना डाला जिसके कारण उन्होंने पूरे समाज को गुमराह किया और समाज को विभिन्न जातियों में बाँट दिया। उनके अनुसार जन्मजात जातिवाद का कोई भी प्रमाण नहीं दे सकता। यह प्रकृति के नियम के खिलाफ है भले ही जातिवादक को आदमी उचित समझता हो लेकिन यह किसी भी प्रकार से व्यक्ति व समाज के लिये उचित नहीं है इसे समाप्त करने के लिये उन्होंने काफी प्रयास किया और सफलता प्राप्त की।

अस्पृश्यता के विरूद्ध विचार– उनके अनुसार अस्पृश्यता देश पर कलंक है और वे इसके खिलाफ थे। वे सदियों से चली आ रही इस प्रथा को समाप्त कर देना चाहते थे। ऐसी स्थिति में जब अस्पृश्यता युगों से चली आ रही हो और

समझ के बाहर हो तो संसार में यह कैसे सम्भव हो सकता है कि हम ईश्वर की दया आदि गुणों का ज्ञान करते रहे और उसकी आराधना के लिये तत्पर रहे इसलिये समाज सुधारकों को यह परम कर्त्तव्य है कि वे अस्पृश्यता रूपी राक्षस का हनन कर डालें और यदि आवश्यकता पड़े तो हिन्दू धर्म को भी नष्ट कर डालें।

पेरियार के धार्मिक, समाजिक और राजनीतिक आंदोलनों का तमिलानाडु के साथ–2 पूरे भारत पर काफी प्रभाव पड़ा। उनके वायकोम और आत्मसम्मान आंदोलनों का उद्देश्य समाज में समानता लाना था। उनके नेतृत्व में जस्टिस पार्टी ने सामाजिक कार्यों में काफी रूचि दिखाई। वे महिलाओं को समान अधिकार दिलाने के लिये की उत्सुक थे। छुआछूत निवारण के लिये उनके प्रयास सराहनीय थे। सार्वजनिक स्थलों, सड़कों, जर्कों, मंदिरों आदि में अव दक्षिण भारत में सभी को आज्ञा दे दी गई। अव किसी पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था उनके प्रयासों से दक्षिण भारत में निम्न जातियों में आत्म सम्मान की भावना का विकास हुआ और उन्होंने अपने अधिकारों की लड़ाई लड़नी शुरू की। इस प्रकार पेरियार ई.वी. रामास्वामी नायर एक महान समाज सुधारक, एक आध्यात्मिक व्यक्ति व कुशल राजनीतिज्ञ थे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन, दयाराम– पेरियार ई.वी. रामास्वमी नायकर व्यक्तित्व, विचार एवं सामाजिक क्रांति संस्करण 1997 पृष्ठ–6
2. वही पृष्ठ –7
3. वही पृष्ठ– 101
4. वहीं पृष्ठ– 111
5. डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर– एनहीं लेशन कास्ट– पृष्ठ 78 1936
6. सरकार समित– आधुनिक भारत– राजकमल प्रकाशन दिल्ली– पृष्ठ 262
7. गुप्ता डॉ0 एस0 के0– आधुनिक भारत– शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद– पृष्ठ 270
8. शुक्ल डॉ0 रामलखन– आधुनिक भारत– हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली पृष्ठ– 289